गजानन माधव मुक्तिबोध

कवि परिचय :– प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म ग्वालियर जिले के श्योपुर में 1917 ई० में हुआ। आप के पिता पुलिस विभाग में थे, इस लिए बार–बार स्थानांतरण के कारण आप की पढ़ाई नियमित व व्यवस्थित रूप से नहीं हो पाई। 1954 में आपने नागपुर विश्वविद्यालय से एम०ए० हिन्दी में की। आप राजनांद गाँव के डिग्री कॉलेज में अध्यापन कार्य करने लगे। आपने अध्यापन, लेखन व पत्रकारिता आदि सभी क्षेत्रों में अपनी योग्यता व प्रतिभा का परिचय दिया। आपका जीवन अत्यधिक संघर्षशील रहा। 1964 में इस महान, चिंतक, दार्शनिक, पत्रकार, लेखक का देहांत हो गया।

सहर्ष स्वीकारा है

पाठ परिचय :– कवि का कहना है कि जीवन में मुझे जो कुछ भी मिला है, उसे मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ, क्योंकि वो सब कुछ तेरा ही दिया है। यह गर्वीली गरीबी, जीवन के गंभीर अनुभव, ये दृढ़ता आदि सब तुम्हारा ही दिया है। तुम से मेरा क्या नाता है, ये में नहीं जानता, परन्तु मैं तुम्हारे स्नेह को अनुभव करता हूँ।

जिंदगी में जो कुछ है जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है मौलिक है
इसलिए कि पल–पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है –
संवेदन तुम्हारा है।

शब्दार्थ :– सहर्ष = खुशी के साथ, स्वीकारा = माना है, गरबीली = गर्व करने योग्य, दृढ़ता = मजबूती, अभिनव = नये, अपलक = निरंतर,
संवेदन = प्रेरणा

व्याख्या :– कवि का कहना है जीवन में मुझे जो कुछ भी मिला है तथा जो कुछ भी मेरा है उसे मैं खुशी से स्वीकार करता हूँ, क्योंकि वह तुम्हें प्यारा है। मेरी गर्व करने योग्य गरीबी, मेरे जीवन के गम्भीर अनुभव, मेरे विचारों की सम्पत्ति, मेरे व्यक्तित्व की मजबूती तथा हृदय में बहने वाली भावनाओं की नदी पूर्ण रूप से मौलिक एवं नये हैं। जो कुछ भी जाग्रत एवं लगातार घट रहा है, वह तुम्हारी प्रेरणा का ही परिणाम है।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. सम्बोधन शैली
4. विशेषणों का सुन्दर प्रयोग गरबीली, गंभीर
5. विचार–वैभव, भीतर की सरिता–रूपक अलंकार
6. पल–पल पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार
7. सहर्ष स्वीकारा, गरबीली गरीबी, विचार–वैभव अनुप्रास अलंकार

जाने क्या रिश्ता है जाने क्या नाता है
जितना भी उड़ेलता हूँ भर–भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात–भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है ।

शब्दार्थ :– रिश्ता = सम्बन्ध, नाता = सम्बन्ध, उड़ेलता = बाहर निकालता हूँ

व्याख्या :– मेरा तुम से क्या सम्बन्ध है मैं नहीं जानता। मेरा हृदय तुम्हारे प्रेम से लबालब भरा है। जितना मैं इस प्रेम को बांटता हूँ, हृदय फिर प्रेम से भर उठता है। क्या मेरे हृदय में प्रेम का झरना बह रहा है ? उसे जितना मैं बाँटता हूँ उतना ही प्रेम से भर उठता है। हृदय मेरा प्रेम से परिपूर्ण है तथा जैसे पृथ्वी पर चाँद मुस्कुराता है, उसकी चाँदनी पृथ्वी पर फैली रहती है, उसी प्रकार तुम्हारा स्नेह से परिपूर्ण चेहरा मेरे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. सम्बोधन शैली
4. दिल में क्या झरना ? प्रश्न अलंकार
5. भर–भर पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार

सचमुच मुझे दंड दो कि भूलूँ मैं भूलूँ मैं
तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं उसी में नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है ।
नहीं सहा जाता है ।
ममता के बादल की मँडराती कोमलता
भीतर पिराती है
कमजोर और अक्षम अब हो गई आत्मा यह

VASUNDHARAHINDI.COM

छटपटाती छाती को भवितव्यता डराती है
बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है।

शब्दार्थ :– अमावस्या = चन्द्रमाविहीन अंधेरी रात, अंतर = हृदय,मन, परिवेष्टित = चारों ओर से घिरा हुआ, आच्छादित = छाया हुआ, रमणीय = सुन्दर, पिराती = दुःख देती, अक्षम = कमजोर, भवितव्यता = भविष्य की चिन्ता, आत्मीयता = अपनापन

व्याख्या :– कवि अपने प्रिय से कहते हैं–मुझे दण्ड दो और मैं चाहता हूँ कि मुझे तुम्हें भूल जाने का दण्ड मिले। मेरे जीवन पर दक्षिणी ध्रुव प्रदेश की अमावस्या की रात का अंधकार छा जाये, अर्थात् मेरा जीवन घने लम्बे अंधकार में डूब जाये। यह अंधकार केवल मेरे जीवन पर ही नहीं, मेरे हृदय, मेरी आत्मा पर भी छा जाये, क्योंकि प्रिय का अपना पन मुझ पर छाया है। प्रिय का सुन्दर उजाला मुझ से सहन नहीं हो रहा, न ही मैं सहन कर पा रहा हूँ तुम्हारी ममता को, क्योंकि तुम्हारी ममता अब मुझे सुख देने के स्थान पर दुःख दे रही है, क्योंकि मेरी आत्मा कमजोर और असमर्थ हो गई है। मुझे भविष्य की चिन्ता डराती है, कि जब प्रिय नहीं होगा, तब मेरा जीवन कैसा होगा। इस लिए तुम्हारा बहलाने वाला, सहलाने वाला अपनापन मैं सह नहीं पा रहा हूँ। मैं अपने बलबूते पर कुछ करना चाहता हूँ, आत्मनिर्भर बनना चाहता हूँ।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. सम्बोधन शैली
4. ममता के बादल, दक्षिण ध्रुव अंधकार रूपक अलंकार

सचमुच मुझे दंड दो कि हो जाऊँ
पाताली अँधेरे की गुहाओं में विवरों में
धुएँ के बादलों में
बिलकुल मैं लापता
लापता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा है।
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
या मेरा जो होता–सा लगता है होता–सा संभव है
सभी वह तुम्हारे ही कारण के कार्यो का घेरा है कार्यो का वैभव
अब तक तो जिंदगी में जो कुछ था जो कुछ है
सहर्ष स्वीकारा है
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।

शब्दार्थ :– पाताली अंधेरा = पृथ्वी के नीचे पाया जाने वाला अंधकार, गुहा = गुफाओं, विवरों = सुरंग, कारण = प्रेरणा

व्याख्या = कवि कहते हैं– सच में मैं दण्ड चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं पृथ्वी के नीचे के अंधकार में डूब जाऊँ, मैं अंधेरी गुफाओं में लापता हो जाऊँ तथा धुएँ के बादलो में गुम हो जाऊँ। पर मुझे पता है–वहाँ भी मुझे तुम्हारा ही सहारा मिलेगा, क्योंकि जो कुछ भी मेरा है या मेरा होने वाला है, वह सब कुछ तुम्हारी ही प्रेरणा का परिणाम है। इस लिए तुम्हारा दिया सुख दुख, अपनापन व दण्ड मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ, क्योंकि जो कुछ भी मेरा है वह तुम्हें प्यारा है, इसी लिए वह मुझे भी प्यारा है।

भाषा सौन्दर्य :–

1. भाषा सरल खड़ी बोली
2. छन्द मुक्त रचना
3. सम्बोधन शैली
4. लापता कि ..... सहारा है–विरोधाभास अलंकार
5. दंड दो–अनुप्रास अलंकार
6. विशेषणों का सुन्दर प्रयोग

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. टिप्पणी कीजिए–गरबीली गरीबी, भीतर की सरिता बहलाती सहलाती आत्मीयता, ममता के बादल

उत्तर :– गरबीली गरीबी :– कवि को अपनी गरीबी पर गर्व है, क्योंकि यह उसे उसके प्रिय ने दी है तथा उसका दिया सब कुछ वह सहर्ष स्वीकारता है।

भीतर की सरिता :– जिस प्रकार सरिता अर्थात् नदी जल से लबालब रहती है, ठीक उसी प्रकार कवि के हृदय में भी अनेकों भावनाओं की सरिता बहती है।

बहलाती सहलाती आत्मीयता :– कवि का कहना है प्रिय का अपनापन सुख व आनन्द प्रदान करता हैं, परन्तु कभी–कभी यही अपनापन व्यक्ति के मार्ग की बाधा बन जाता है।

ममता के बादल :– प्रिय का अपनापन कवि को घेरे हुए है, जोकि आनंदित करने वाला है, परन्तु यह अपनापन व्यक्ति को अक्षम बनाता
है। इसलिए वह इस अपनेपन से बाहर आना चाहता है।

प्रश्न 2. इस कविता में और भी टिप्पणी पद प्रयोग हैं। ऐसे किसी एक प्रयोग का अपनी ओर से उल्लेख कर उस पर टिप्पणी करें।

उत्तर :– दिल में क्या झरना है ? :– कवि का कहना है प्रिय से मेरा क्या रिश्ता है, मैं नहीं जानता। परन्तु प्रिय के प्रेम को मैं अपने हृदय में अनुभव करता हूँ। प्रिय के दिये प्रेम को जितना मैं बाँटता हूँ, उतना ही हृदय फिर से प्रेम से लबालब भर उठता है, जैसे हृदय में कोई मीठे पानी का झरना है जो कभी खाली नहीं होता।

प्रश्न 3. जाने क्या रिश्ता है जाने क्या नाता है
जितना भी उड़ेलता हूँ भर–भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है ?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है।

उत्तर :– कवि का कहना है प्रिय से मेरा क्या रिश्ता है, मैं नहीं जानता। पर मैं प्रिय के प्रेम को अपने हृदय में अनुभव करता हूँ। उस प्रेम को जितना मैं उड़ेलता हूँ, उतना ही मेरा हृदय प्रेम से लबालब भर जाता है, जैसे मेरे हृदय में कोई प्रेम का झरना बह रहा हो। हृदय में प्रिय का प्रेम है तथा अपने व्यक्तित्व पर तुम्हारा मुस्कुराता चेहरा अनुभव करता हूँ, जैसे चाँद की चाँदनी पृथ्वी पर छाई रहती है।

कवि दक्षिण ध्रुवी अमावस्या के अंधकार में डूब जाना चाहता है, क्योंकि प्रिय का उजाला एवं ममत्व वो झेल नहीं पा रहा है तथा प्रिय के कारण वह अक्षम होता जा रहा है। वह अपने व्यक्तित्व का विकास अपने बूते कर करना चाहता है। इसलिए अंधकार अमावस्या में नहाने की बात की गई है, अर्थात् प्रिय को भूल जाना चाहता है।

प्रश्न 4. तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं
इस लिए कि तुमसे ही परिवेष्टि आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता है ।

क) यहाँ अंधकार अमावस्या के लिए क्या विशेषण इस्तेमाल किया गया है और उससे विशेष्य में क्या अर्थ जुड़ा है ?

उत्तर :– अंधकार अमावस्या के लिए दक्षिण ध्रुवी विशेषण का प्रयोग किया है, इससे अंधकार का घनत्व बढ़ गया है, क्योंकि अमावस्या की रात काली होती है। दक्षिणी ध्रुवी अंधकार अमावस्या कहने से लम्बी अंधेरी रात हो जाती है।

ख) कवि ने व्यक्तिगत संदर्भ में किस स्थिति को अमावस्या कहा है ?

उत्तर :– कवि अपने विकास को अपने बलबूते पर करना चाहता है, इसलिए वह प्रिय के स्नेह से दूर एकाकी जीवन जीना चाहता है। इसी को अमावस्या कहा गया है ।

ग) इस स्थिति से ठीक विपरीत रहने वाली कौन सी स्थिति कविता में व्यक्त हुई है ? इस वैपरीत्य को व्यक्त करने वाले शब्द का व्याख्यापूर्वक उल्लेख करें ?

उत्तर :– प्रिय को भूल जाने के लिए अंधकार अमावस्या से विपरीत स्थिति 'तुमसे ही परिवेस्टि आच्छादित रहने का रमणीय उजेला' कवि प्रिय से दूर रहने के लिए 'अमावस्या अंधकार' से व्यक्त करता है तथा प्रिय को व्यक्त करने के लिए कहता है। प्रिय के स्नेह का उजाला बहुत चमकदार है। उसने उसे घेर रखा है।

घ) कवि अपने संबोध्य को पूरी तरह भूल जाना चाहता है, इस बात को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने के लिए क्या युक्ति अपनाई है ? रेखांकित अंशों को ध्यान में रखकर उत्तर दें।

उत्तर :– कवि अपने प्रिय को भूल जाना चाहता है। वो चाहता है उसके शरीर पर, चेहरे पर, आत्मा पर अमावस्या का अंधकार छा जाये। वह पूरी तरह प्रिय को भूल जाना चाहता है। इस लिए वह अमावस्या के अंधकार में डूब जाना चाहता है।

प्रश्न 5. बहलाती सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती–और कविता के शीर्षक सहर्ष स्वीकार है में आप कैसे अंतर्विरोधपाते हैं ?

उत्तर :– कवि को प्रिय का दिया सब कुछ सहर्ष स्वीकार है, परन्तु जब प्रिय का अपनापन आने वाले भविष्य के लिए बाधक बनने लगता है, तब वह कहता है कि प्रिय का अपनापन अब सहन नहीं होता। वह उससे दूर जाना चाहता है, तब स्वीकार की स्थिति अस्वीकार में बदल जाती है, अंतर्विरोध उत्पन्न होता है।

प्रश्न 6. वह क्या–क्या है जिसे कवि ने सहर्ष स्वीकारा है ?

उत्तर :– कवि को अपनी गरीबी पर गर्व है, कवि के गंभीर अनुभव, विचार की सम्पन्नता, व्यक्तित्व की दृढ़ता तथा हृदय में बहने वाले विचारों की सरिता को सहर्ष स्वीकार करते हैं, क्योंकि ये सब उसे प्रिय ने दिया है तथा सब प्रिय को प्रिय है।

प्रश्न 7. कवि जिस सहर्ष को स्वीकारता है उसीको क्यों भुला देना चाहता है ?

उत्तर :– जब प्रिय का अपनापन, ममता उसके भविष्य के मार्ग में बाधक बनने लगता है, कवि के व्यक्तित्व का विकास अवरूद्ध होता है तथा कवि अपना विकास अपने बलबूते पर करना चाहता है, तब कवि उसे भुला देना चाहता है।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM